

Shri Raj Rajeshwari Puja

Date : 21st January 1994
Place : Hyderabad
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 07
English	-
Marathi	-

II Translation

English	08 - 13
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आज हम श्री राज राजेश्वरी की पूजा करने वाले हैं। खासकर दक्षिण में देवी का स्वरूप अनेक तरह से माना जाता है। उसका कारण यहां पर आदिशंकराचार्य जैसे अनेक देवीभक्त हो गए हैं। और उन्होंने शाक्त धर्म की स्थापना की अर्थात् शक्ति का धर्म दो तरह के धर्म एक साथ चल पड़े। रामानुजाचार्य ने वैष्णव धर्म की स्थापना की और दो तरह के धर्मों पर लोग बढ़ते-बढ़ते अलग हो गये। असल में जो वैष्णव है उसका कार्य महालक्ष्मी का है और महालक्ष्मी के जो अनेक स्वरूप हैं उनको अपने में आत्मसात करना है। जैसे की धर्म की स्थापना करना और मध्यमार्ग में रहना। न तो बाएं में जाना न दायें में जाना मध्य मार्ग में रहना। इन्हीं को वैष्णव कहते हैं। फिर आगे चलकर वैष्णव धर्म गुजरात आदि सब देशों में सहस्रार। वैष्णव मार्ग से जब आप गुजरते हैं, कुण्डलिनी के द्वार तो आप अन्त में सहस्रार में पहुंच गये। लेकिन सहस्रार में ब्रह्मरन्ध्र पर सदाशिव का स्थान है। सो वैष्णव धर्म करने से आप अन्त में पहुंच जाते हैं सदाशिव के पास जो कि शक्ति धर्म का ही अंग है। लेकिन ये समझना चाहिए कि कुण्डलिनी शक्ति है और कुण्डलिनी शक्ति मध्य मार्ग से ही गुजरती है। तो दोनों को अलग कैसे किया जा सकता है। शक्ति का जो मार्ग है वो भी मध्य मार्ग है। दोनों एक साथ बंधी हुई चीजों को अलग-अलग कर दिया गया। उसकी वजह ये कि कुण्डलिनी का उत्थान उन दिनों में होता नहीं था। महाराष्ट्र में कोल्हापुर में महालक्ष्मी का मन्दिर है जहां वो जागृत अवस्था में है। वहां बैठकर के लोग गाते हैं— उदय-उदय अम्बे। अम्बा तो शक्ति है। कुण्डलिनी को अम्बा कहते हैं। तो उस महालक्ष्मी मन्दिर में बैठकर के वो गाते हैं कि शक्ति तू जागृत हो। उनको यह नहीं पता कि वो क्यों गाते हैं। तो वैष्णव व अपना मार्ग बनाते हैं। रास्ता बनाते हैं, पथ बनाते हैं। और जब वो पथ बन जाता है तब उससे कुण्डलिनी का जागरण होता है। सहजयोग में हम लोग भी यही करते हैं। जब आप लोग मेरी ओर ऐसे हाथ करके बैठते हैं तो आपके सातों चक्र धीरे-धीरे ठीक होते हैं मानो आप वैष्णव बनते जा रहे हैं। आप चरम से मध्य में आ जाते हैं।

और आपके चक्र ठीक से बैठने लग जाते हैं। जब चक्र आपके ठीक हो जाते हैं तभी कुण्डलिनी जागृत होती है। इसलिए पहले आप वैष्णव बनते हैं, उसके बाद आप शक्ति बनते हैं। इस प्रकार से दोनों चीजें एक ही हैं।

किन्तु दक्षिण में देवी के अनेक स्वरूप माने गये हैं और उसमें से राज राजेश्वरी को बहुत ज्यादा माना जाता है। अब देखा जाए तो लक्ष्मी जो है वो वैष्णव पथ पर है विष्णु के पथ पर। विष्णु की पत्नी है और इसलिए ये लक्ष्मी का एक स्वरूप बताया गया है जो कि शक्ति का ही स्वरूप है। राज राजेश्वरी का मतलब है कि जब कुण्डलिनी नाभि में आ जाती है जहां पर उसे लक्ष्मी का स्वरूप प्राप्त होता है। ऐसा कहें या लक्ष्मी का परिणाम उस पर आता है। या जब ये कुण्डलिनी नाभि चक्र में आती है। सो लक्ष्मी स्वरूप ये किस प्रकार की होती है? इस पर अनेक तरह की लक्ष्मियों का आरोपण है। गृह लक्ष्मी है, राज लक्ष्मी है। इस तरह से अनेक लक्ष्मियों हैं। पर ये लक्ष्मी तभी उन स्वरूपों को प्राप्त करती है जब इसमें कुण्डलिनी की शक्ति आ जाती है। कुण्डलिनी के शक्ति के मिलन से ही ये स्वरूप आता है। इसलिए राज राजेश्वरी, कुण्डलिनी की शक्ति नाभि पर आने पर जो स्वरूप धारण करती है उसी को लोग राज राजेश्वरी मानते हैं। या कहा जाए आदि शक्ति का स्वरूप नाभि चक्र में जो होता है उसे राज राजेश्वरी कहते हैं। अब जिस इन्सान के नाभि चक्र में राज राजेश्वरी की स्थापना हो गयी, माने गृहलक्ष्मी हो गयी बाईं ओर में तो दायी और में राज राजेश्वरी हो गई। राज्यलक्ष्मी की जो अन्तिम स्थिति है वो राज राजेश्वरी की है। अब ये राज राजेश्वरी की स्थिति में एक सहजयोगी को कैसे होना चाहिए। इसमें लक्ष्मी का तो आर्शीवाद आना ही है। जब ऐसे मनुष्य पर कुण्डलिनी जागरण के बाद लक्ष्मी का आर्शीवाद आ गया, और आना ही है, जितने भी सहजयोगी हैं उन पर लक्ष्मी का आर्शीवाद आ गया है। और कभी-कभी लक्ष्मी काफी बढ़ सकती है। अन अपेक्षित और नहीं भी बढ़ने पर ऐसे इन्सान की तबीयत एक राजाओं जैसी हो जाती है। जब तक आपकी तबीयत

वैसी होती नहीं तब तक समझना चाहिए कि कुण्डलिनी अभी नाभि में ही घूम रही है। तबीयत बदल जाती है। सहज योग में आने के बाद जो सबसे बड़ा चमत्कार होता है कि मनुष्य की तबीयत बदल जाती है। उसका स्वभाव बदल जाता है। जो आदमी अलक्ष्मी से भरा है, जिसके अन्दर लक्ष्मी दिखाई नहीं देती, माने ये के बहुत से रईस लोग भी होते हैं लेकिन वो कंजूस होते हैं तो उनको कोई लक्ष्मी पति नहीं कह सकता। उनमें लक्ष्मी का कोई स्वरूप भी दिखाई नहीं देता, भिखारी जैसे रहते हैं हर समय पैसे के लिए रोते हैं किसी के लिए दो पैसा निकालना उनके लिए मुश्किल है। ऐसे जो कंजूस लोग होते हैं उनको कहना चाहिए कि उनके अन्दर अभी कुण्डलिनी का जागरण ही नहीं हुआ। कंजूसी के मारे मरे जाते हैं। इतने कंजूस होते हैं इतना पैसे के बारे में सोचते हैं कि उनका जिगर भी खराब हो सकता है। उनकी शक्ल बिल्कुल भिखारियों जैसी लगेगी। लक्ष्मी को प्राप्त करना ही कार्य नहीं है कुण्डलिनी का। जो लक्ष्मी का स्वरूप है उसको अपने अन्दर उतारना ही कुण्डलिनी का कार्य है। तो राज राजेश्वरी जिसको मानते हैं, जो ये कुण्डलिनी की शक्ति है जो आपके अन्दर लक्ष्मी पति का स्वरूप उतारती है, वो राजेश्वरी है। इसका मतलब ये नहीं कि आपके पास खूब रुपया पैसा आ जाएगा, पर दानत्व, जैसे कि आप कोई राजा हैं। राज राजेश्वरी का मतलब है कि आप राजा तबियत हो गये। अपने तो राजा लोग भी महाभिखारी होते हैं। और कंजूस होते हैं झूठे होते हैं पैसा खाते हैं सब काम करते हैं। लेकिन यहां तो शुद्ध स्वरूप कि बात हो रही है। जो राज राजेश्वरी का पूजारी है, जिसने उसे प्राप्त कर लिया उसके इतने गुण होते हैं कि शायद आज मैं इस भाषण में न बता सकूँ। लेकिन सबसे बड़ी वो चीज है कि ये होती है कि उसके अन्दर दानत्व, उदारता आ जाती है। उदार हो जाता है क्योंकि वो जानता है कि मैं राज राजेश्वरी कि शक्ति से प्लावित हूँ। मुझे पैसे कि या किसी चीज की दरकार ही नहीं रहने वाली तो क्यों न मजा उठा लूँ। क्यों न लोगों को चीज देने से मजा उठा लूँ। पहले जब कोई राजा लोग खुश होते थे तो अपने पास की सबसे कीमती चीज उठा कर दे देते थे। जिस आदमी में उदारता नहीं है, दानत्व नहीं है, उसका अर्थ अभी अधूरा ही पड़ा हुआ है। सबसे पहली चीज तो ये कि कोई राजा किसी से जाकर भीख नहीं मांगता। वो गरीब हो जाए और उसकी सारी सम्पत्ति लुट जाए तो भी वो किसी से जाकर भीख नहीं मांगता। वो मर जाएगा पर भीख नहीं मांगेगा।

तो राजा तबियत सहजयोगी हो जाते हैं। उसके रहन-सहन में भी एक राजा तबियत होती है। वो फटे कपड़े पहन कर के नहीं घूमते जैसे कि हरे रामा वाले लोग हैं। श्री राम का नाम लेते हैं श्री कृष्ण का नाम लेते हैं और कृष्ण स्वयं कुबेर हैं और उनकी प्रजा बनकर भिखारी बनकर घूमते हैं। किसी भी तरह से उनको तो कृष्ण का तत्व ही पता नहीं है। लेकिन सहजयोगियों को पता होना चाहिए कि आपकी तबियत के अनुसार परम चैतन्य आपकी स्थिति बनाएगा। जो आदमी हमेशा पैसे के लिए रोता रहेगा उसकी हालत हमेशा वैसी ही रहेगी। जो इन्सान हर समय पैसे को तोलता रहेगा और देखता रहेगा कि मैं किस तरह से पैसा बनाऊँ, यहां तक सहजयोग में आकर लोग चाहते हैं कि सहजयोग में पैसा बनाएं ये तो बिल्कुल ही गये गुजरे लोग हैं। इनसे गए बीते तो कोई भी नहीं है। एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि सबसे गए बीते लोग कौन हैं तो उन्होंने कहा कि जो भगवान के मन्दिर में आकर लोगों से भीख मांगते हैं। जब भगवान बैठे हैं तो लोगो से भीख काहे को मांगते हैं। इसी प्रकार सहजयोग में भी ऐसे लोग हैं, बहुत ही कम हैं पर हैं, जो सोचते हैं कि सहजयोग में आकर हम किसी बात से पैसा बनाएं। हमें कुछ लोगों ने बताया कि गणपति पुणे में कुछ लोग सामान लेकर आए थे उसे बेच रहे थे। एक साहब जरूर हैं जो हमसे पूछ कर लाए और उन्होंने बेचा। और जो कुछ भी उनको मुनाफा हुआ वो उन्होंने सहजयोग को दे दिया। मैं ये कहती हूँ कि ये भी नहीं करना चाहिए। पर वो कहते हैं कि हमारी वजह से लोगों को सहूलियत होती है। उन्हें साड़ियां मिल जाती हैं। पर जो आदमी सहजयोग में आकर सिर्फ पैसा कमाना चाहता है वो तो ऐसा है कि उसको तो सहजयोगी कहना ही नहीं चाहिए। आप समझ ही नहीं सकते कि राज राजेश्वरी की शक्ति क्या है। उसकी शक्ति से मनुष्य पैसा हो या नहीं हो कोई आपके अन्दर डर, अभाव की भावना ही नहीं रहती कि मुझे कोई अभाव है। पूर्ण लोग होते हैं। मुझे क्या जरूरत है। मैं क्यों डरूँ? मैं जहाँ रहूँगा मेरे लिए वहीं समृद्धि है। वही मैं सब कुछ चीज प्राप्त कर सकता हूँ। और वो एक बहुत ही आलीशान तरीके से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उसकी तबियत एक बहुत ही भव्य, महान इन्सान के जैसे होती है। उसको देने में ही मजा आता है लेने में नहीं। कोई आदमी रईस होगा तो अपने घर में कोई गरीब होगा तो अपने लिए। पर अगर वो सहजयोगी है चाहे वो अमीर है या गरीब उसके लिए वो सर आँखों पर। पूरी तरह से उसकी मदद करने को तैयार रहता

है। सहजयोग में ऐसे भी लोग हैं जो असहज लोगों के लिए बहुत करते हैं। पर अगर सहजयोगी कोई गरीब आ जाए तो उसको बैठने के लिए कुर्सी भी नहीं देते। वो बाह्य के आडम्बरों को देखकर के बहुत से लोग महत्व करते हैं। ये बड़े महान हैं। इनके पास इतनी मोटरे हैं। ये बड़े भारी यहां के मशहूर एक्टर हैं, डाक्टर हैं या आर्कीटेक्ट हैं। बहुत बड़े आदमी हैं। ये जो बाह्य कि उपाधियां हैं, उसका महत्व करते हैं। पर कोई अगर ये सोचता है कि ये जो शक्ति का संचय इसके अन्दर है। इतनी चैतन्य कि लहरें इसमें से बह रही हैं। ये कौन औलिया है? उसको राज तबियत कहते हैं। अपने देश में भी ऐसे बहुत से लोग हो गए हैं। शिवाजी महाराज का उदाहरण खासकर सोचने में आता है। स्वयं तो वो थे ही आत्मक्षात्कारी और आदर्श पुरुष पर उनका सन्तों के प्रति जो व्यवहार था वो अत्यन्त सुन्दर और नम्र थे। उनके पास उनके गुरु रामदास एक दिन आए और उन्हें बाहर से ललकारा। शिवाजी महाराज ने एक चिट्ठी लिखकर उनकी झोली में डाल दी। उस चिट्ठी में लिखा था कि गुरु जी मैंने अपना सारा साम्राज्य, सत्ता आपकी झोली में डाल दी। उस चिट्ठी को पढ़कर गुरु रामदास हंसे, हंसकर उन्होंने कहा बेटे हम तो सन्यासी हैं, हम क्या तुम्हारे साम्राज्य लेकर करेंगे? तुम तो राजा हो और तुम्हारा कर्तव्य है लेकिन हां अगर तुम सोचते हो कि इस साम्राज्य को भक्ति से चलाएं तो इसका झंडा जो है, जो हम छाती पहनते हैं, उस रंग का त्रिकोणी झंडा बना लो। उस झंडे से लोग जान जाएंगे कि तुम भी एक सन्यासी भाव से राज कर रहे हो। उसके प्रति कोई खिचाव लगाव तुमको नहीं है। तुम हो राजा लेकिन उसको तुम जानते नहीं हो कि तुम राजा हो। जो लोग अपने ही, मैं राजा हूं, पागल जैसे कहते फिरते हैं फलाना हूं वो होते नहीं हैं और जो होते हैं वो कभी कहते भी नहीं। ऐसे बहुत से लोग आपको दिखाई देंगे। एक बार हम लन्दन में सफर कर रहे थे। हमारे साथ एक साहब ब्रजुर्ग बैठे हुए थे बातें करने लग गये। वहां ज्यादातर औरतों से कोई बात नहीं करते। आपस में ऐसे ही बात करते हैं। लेकिन उन्होंने हिन्दुस्तान के बारे में बहुत कुछ पूछा, ये कैसे हैं, वो कैसे हैं, तो मैंने कहा आप हिन्दुस्तान में आओ। मैं ५५ भारत में इतने साल था। ऐसी बात नहीं है और कुछ नहीं बताया अपने बारे में कौन थे क्या थे। उसके बाद वो उतर कर चले गये हम भी उतर कर चले गये। उसके बाद एक दिन हम और हमारे पति जा रहे थे तो उनसे मुलाकात हुई ट्रेन में। तो उन्होंने कहा हमारे घर आइये हम लोग बातें करेंगे हिन्दुस्तान के

बारे में ये वो। तो जाकर देखा बड़ा भारी आलीशान मकान, बहुत शान से रह रहे हैं। पता हुआ कि वो अपने यहां वायसराय थे। लेकिन उन्होंने कहा नहीं अपनी जवान से और पता भी नहीं हुआ कि वह वायसराय थे। और कोई वायसराय से मिल भी नहीं सकता था पहले जमाने में और इतनी नम्रता से उन्होंने बात की, किसी चीज की जरूरत हो तो बताइए। और जो मुझे महत्व दिया मैंने सोचा कि मुझे इतना क्यों महत्व दे रहे हैं। कोई परेशानी तो नहीं हो रही? यहां के लोग अक्खड़ हैं ये वो सब बातें कहीं हिन्दुस्तान के जैसे नहीं है, धार्मिक नहीं है। इतनी सारी बातें करने के बाद भी उन्होंने ये नहीं बताया कि वो यहां वायसराय रह चुके हैं और इतनी उनको श्रद्धा है। हिन्दुस्तान के बारे में है। और इतने प्रेम से हिन्दुस्तानियों की बातें बता रहे थे। अपने यहां तो अगर कोई मन्त्री का सचिव हो जाए तो उसकी खोपड़ी खराब हो जाती है। इस तरह लोगों के दिमागों में थोड़ा सा भी कुछ मिलने पर खोपड़ी खराब हो जाती है और ये लक्षण राजाओं का नहीं है।

राजाओं कि पहली चीज है कि अत्यन्त नम्रता होनी चाहिए। अक्खड़पना आता है किसलिए? अक्खड़पना आता है कि वो सोचता है कि इतना पैसे वाला हूं मैं सब को डांट सकता हूं, झाड़ सकता हूं। और अगर वो कुछ पढ़ा लिखा है या कोई बड़ी नौकरी में हो, कुछ हो, बड़े बाप का बेटा है तो बहुत ही अक्खड़ता चढ़ जाती है। उससे तो आप बात ही नहीं कर सकते। अधजल गगरी छलकत जाए जो परिपूर्ण है इन्सान वो अत्यन्त नम्र होता है। सादगी होती है उसके अन्दर। आप समझ जाएंगे कि जब तक आप परिपूर्ण नहीं हैं आप झूठा घमंड झूठा गुस्सा और एक अजीब तरह का व्यक्तित्व आप प्राप्त करते हैं कि सब आपका नाम सुनते ही भाग खड़े होते हैं। एक तो भिखारी जैसे होते हैं। मेरे को ऐसा हो गया मेरे बाप को ऐसा हो गया, उनको ऐसा हो गया मेरे को ऐसा हो गया। मेरे पास पैसे नहीं हैं मेरे पास ये नहीं हैं। मुझे ये चाहिए। एक भिखारी जैसे और दूसरे आते हैं वो चिल्लाते हुए तो पहले वैष्णव बनना होगा, मध्य में आना होगा। मध्य में आए बगैर आप राज राजेश्वरी की शक्ति को प्राप्त नहीं कर सकते। आपके अन्दर की शक्ति चल ही नहीं सकती। जैसे कि प्लास्टिक के पेड़ को पानी डालने से फायदा क्या होगा। इसी तरह इन लोगों में एक तरह का आडम्बर एक तरह का झूठा तमाशा।

मनुष्य में लालच एक बहुत गंदी चीज है, अनहोनी चीज है। दूसरों की चीजों का लालच करने वाले बहुत ही

गाए-गुजरे लोग होते हैं। और सहजयोगियों के लिए तो बड़ी परेशानी की बात है। एक तरफ तो वो सहजयोगी हैं और दूसरी तरफ लालच। मगर के मुँह में उनका पैर है तो वे नाव में कैसे आएंगे? मजा उठाना जब आ जाए और उसका आनन्द लेना, उसका समाधान लेना, जैसे शवरी के बेर खाकर श्रीराम इतने सन्तुष्ट हो गये। उस चीज को जब आप समझने लग जाएंगे तब कहना है कि आप राज राजेश्वरी की शक्ति से प्लवित हैं। पोषित हैं। प्रेम से अगर कोई छोटी सी चीज, अब कोई छोटी सी चीज ही दे दे कोई सुपारी ही दे दे। और मैं सुपारी खाती नहीं हूँ तो भी जरूर खाऊंगी। और खाना चाहिए। क्योंकि उससे दूसरा आदमी खुश हो जाएगा। उसे क्या पता कि मैं सुपारी नहीं खाती। माने ऐसा है कि कोई सी भी चीज वस्तु संसार की जो भी इसमें जैसे शीशों में आप पारा लगा दें, साधारण, सर्व साधारण शीशा, जो पारदर्शी है, उसमें अगर पारा लगा दें तो शीशा बन जाता है। इससे आप अपनी शकल देख सकते हैं। कोई सी भी वस्तु में आप प्रेम जड़ दे वो वस्तु इतनी सुन्दर हो जाती है फिर ये मन करता है ये किसे दें? जैसे बाजार जाएंगे तो मन करेगा हाँ ये उन के लिए ठीक है अपने लिए क्या ठीक है ये विचार ही नहीं आना चाहिए। इसका अगर विचार छूट जाए कि मैं क्या पसंद करती हूँ मुझे क्यों चाहिए तो खो गये। इसका मतलब ये है कि वो सर्वव्यापी शक्ति आपके अन्दर आयी नहीं है अगर सर्वव्यापी शक्ति आपके अन्दर आ गयी तो आप बहुत सौम्य हो जाएंगे और जान लेंगे कि किसे किस चीज की जरूरत है। जैसे आप कहीं गये और देखा कि सुन्दर सा दीप है उनके घर में गयी थी उनके पास दीप नहीं था। उनके लिए ये दीप ले लेना चाहिए। सबकी जरूरतें समझ में आने लग जाती हैं जब अपनी जरूरतें कूँ नहीं रहती। सबकी तकलीफें याद आ जाती हैं। कोई बीमार है, किसी चीज की जरूरत है, किसी के पास एक टेपरिकार्ड नहीं है वो मेरा भाषण सुनना चाहते हैं। सब पता हो जाता है और उसको वो चीज दे दें तो कहेगा माँ ये आप को पता कैसे। पता नहीं कैसे लग जाता है। इसलिए प्यार को ज्ञान कहते हैं ज्ञान ही शुद्ध प्रेम है। क्योंकि आप किसी के साथ भी शुद्ध प्रेम करते हैं आपको उसके प्रति सारा ज्ञान आ जाता है। वो चाहे फिर महामाया हो आप जान सकते हैं पर शुद्ध प्रेम होना चाहिए। शुद्ध प्रेम से सारा ज्ञान आपको मिल जाएगा। कोई सा ज्ञान हो किसी भी प्रकार का अगर आप शुद्ध प्रेम की दृष्टि से देखते हैं।

तो जब आपकी जागृति हो जाती है तो आप विश्व बन्धुत्व में आ जाते हैं अब कितनी बड़ा काम है ये राज राजेश्वरी का कि वो सबके बारे में विचार करती है जैसे एक राजा की रानी है तो वो प्रजा की तकलीफें हैं उन्हें देखेगी, उनकी परेशानियों को दूर करेगी। वो बैठ कर ये तो नहीं गिनेगी की जेबरात कितने हैं, हीरे कितने हैं। वो ये देखेगी कि मेरी प्रजा में कितने लोग परेशान हैं। छोटी से छोटी चीज उनको क्या चाहिए। इसी तरह आपकी भी तबीयत हो जानी चाहिए। जब तक हम अपने से उठकर विश्व में व्यापक नहीं होते हैं तब तक आप विश्व निर्मल धर्म के पुजारी कैसे हो सकते हैं और विश्व निर्मल धर्म कोई बाहर का तो है नहीं कि जैसे हम हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, ईसाई हैं। ऐसे तो हैं नहीं। ये तो अन्दर का प्रकाश है और इस प्रकाश में मनुष्य भव्य व्यक्ति बन कर निकल आता है। वो ये नहीं सोचता कि मुझे क्या चाहिए क्या करना है। वो ये सोचता है मैं औरों के लिए क्या कर सकता हूँ। अभी तो मैं कम ही हूँ। माँ मैंने सौ आदमियों को आत्मसाक्षात्कार दिया और तो मैं कर ही नहीं पाया। ऐसा जब वो सोचने लग जाता है तब सोचना चाहिए कि उसके अन्दर राज राजेश्वरी की शक्ति कूद रही है। वो कौंध रही है, परेशान कर रही है कि तू करता क्या है? तेरे पास इतनी शक्ति है, तू देता क्यों नहीं इसको? पैसे से कोई तोल नहीं सकता। किसी भी चीज से नहीं। अब आज देखिये कि फोन आया रशिया से तो मुझे देर हो गयी रास्ते में मैंने पूछा कि भई कहां बैठे हैं सब लोग तो कहने लगे खुले में। तो मैंने कहा अरे, भई कोई छत बत नहीं लगाया तमने। तो उनको मालम नहीं था कहरने जगा माँ ये ठंडी-ठंडी हवा तो बह रही है। तो मैंने कहा होना तो चाहिए। मुझे अपने सिर पर छत औरों पर नहीं तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा। तो कहने लगे ऐसा ही है आपके ऊपर छत औरों पर नहीं तो मैंने कहा ये गलत बात है। जब देखा मैंने सबके सर पर छत है तो मुझे बड़ा अच्छा लगा। इसी प्रकार छिंदवाड़े में बड़ी गर्मी हो गयी थी और सब लोग खुले में बैठे थे। पूरे समय मुझे यही फिकर लगी रही कि ये क्या हो रहा है। सब लोग बता रहे थे माँ हमको तो ठंड लग रही थी अन्दर से। इतने धूप में बैठे-बैठे लोगों को ठंड लग रही थी। वही राज राजेश्वरी की शक्ति सब जगह सबका हित करती है। हित से भी ज्यादा कहना चाहिए कि सबको आराम देती है। सुख, आनन्द प्रदान करती है। और वो शक्ति आपके अन्दर भी है। उसको आप चाहें तो कहां से कहां पहुंचा सकते हैं। एक पैसे से भी जो काम हो सकता है वो हजारों

रूपयो से नहीं हो सकता। लेकिन देने की शक्ति महान होनी चाहिए। फिर से कहूंगी कि विदुर के घर जाकर श्रीकृष्ण ने साग खाया लेकिन दुर्योधन का मेवा नहीं खाया। इन सब चीजों में बड़ा भारी संकेत है। वो ये कि प्रेम से भरी चीज उसका दाम किसी भी चीज से तोल नहीं सकते। सो वैष्णवों को चाहिए कि अपने लक्ष्मी तत्व को साफ करें और उसके लिए मेरी जरूरतें कुछ नहीं है सारी जरूरतें दूसरों कि हैं, इसलिए मैं सहजयोग में आया हूँ, ऐसे विचार लाइये। कल आपको आश्चर्य होगा कि कार्यक्रम के बाद इतने लोग आए। मुझे बड़ा आनन्द आया। पर एकदम मेरा दायां हृदय पकड़ गया, बुरी तरह से। मेरी समझ में नहीं आया कि यहां दायां हृदय इतनी बुरी तरह से क्यों पकड़ रहा है। ऐसा तो कभी भी नहीं हुआ। ये वही शक्ति है जिसने संकेत दिया। फिर मैंने पूछा कि यहां 'गृहलक्ष्मियों' का क्या हाल है। हैदराबाद में लोग गृहलक्ष्मी से किस तरह से व्यवहार करते हैं। तो पता हुआ कि बहुत ही बुरी तरह से व्यवहार करते हैं उनकी कोई इज्जत ही नहीं करते। और हर समय झाड़ते रहते हैं। माँ की इज्जत करते हैं पर बीबी की नहीं करते, कहते हैं मुस्लिम प्रभाव आया हुआ है। पता नहीं है औरत की इज्जत करने के लिए कितना बताया गया है कुरान में, वो नहीं करते। बेवकूफी है। उसमें जितनी इज्जत औरत की है और कहीं है ही नहीं। तब मुझे समझ में आया कि जहां स्त्री की पूजा होती है, यत्र नार्या पूजयन्ते तन्त्र रमन्ते देवताः। जहां स्त्री की इज्जत नहीं होगी वहां पर कभी देवताओं का वास हो नहीं सकता। निःसन्देह कहना चाहिए कि अगर आपने अपनी पत्नी की पूर्णतः इज्जत की तो बच्चे भी आपकी इज्जत करेंगे और वो एक दूसरे की इज्जत करेंगे। ये निश्चित बात है। पर अगर स्त्री स्वयं ही पूजनीय न हो और वो इस तरह के कार्य करती है जो 'पूजनीय' नहीं है तो फिर उसको ठीक करना चाहिए। लेकिन अगर वो अच्छी औरत है और वो बच्चों को संभालती है, घर को प्रेम से रखती है ऐसी औरत की इज्जत घर में ही नहीं समाज में भी होनी चाहिए। आप सोचिए कि मेरा दायां हृदय पकड़ गया और मैं आधे घंटे तक तड़पती रही। वो तड़पन जो आप अपनी पत्नियों को देते हो वो मेरे अन्दर आ गयी। अब हो सकता है कि स्त्री इतना ज्यादा सहजयोग नहीं समझती हो बुद्धि से, पर हृदय से समझती हैं। स्त्रियां हृदय से चीज को समझती हैं, और पुरुष मस्तिष्क से समझता है। लेकिन हृदय से समझना भी बहुत बड़ी चीज है। और स्त्री को हमेशा शक्ति स्वरूपा माना गया है। जिस घर में स्त्री का

मान नहीं होगा। कोई कार्य वहां ठीक से हो ही नहीं सकता। कारण स्त्री जब शक्ति है। अगर समझ लीजिए इसमें (माइक) अगर बिजली नहीं होगी तो मेरा बोलना बेकार है। इतनी बड़ी भारी चीज यहां लाकर रख दी और ये किसी काम की नहीं इसमें अगर बिजली नहीं है तो। अगर घर की स्त्री को आप इस तरह से दबाएं और उसका मान नहीं रखेंगे तो शक्ति आपके अन्दर दौड़ नहीं सकती। सबसे बड़ा दोष है। कल क्या कभी भी नहीं हुआ मुझे ऐसे कार्यक्रम के बाद कि दायां हृदय इतने जोर से पकड़ गया। मैं तो सोचती थी ये चीजे उत्तरी भारत में ज्यादा हैं पर दक्षिण भारत में और भी ज्यादा हैं। हिन्दुस्तानियों में दोष है कि नारी की शक्ति का मान नहीं रखते। सबसे बड़ा दोष है। इधर देखें तो देवी की पूजा करेंगे। कन्या रूप में मानेंगे। सब रूप में मानेंगे पर गृहलक्ष्मी के रूप में नहीं मानेंगे। इसलिए आज साफ-साफ बता रहे हैं कि अगर आप सहजयोगी हैं तो अपनी स्त्री के प्रति आदर युक्त रहें। खुले आम मैंने सुना कि आप झाड़ते रहते हैं। पुरुष को कोई अधिकार नहीं है कि नारी का अपमान करे। किसी भी वजह से मेरे विचार से एक ये चीज ठीक हो जाए तो राज राजेश्वरी की शक्तियां जागृत हो जाएंगी। पूरी तरह से समझ लेना चाहिए कि पति पत्नियां एक ही रथ के दो चक्के हैं। एक बायां और एक दायां। बायां दायें में नहीं जा सकता, दायां बायें में नहीं जा सकता। पर दोनों का स्थान जरूरी है। दोनों एक जैसे ही हैं पर स्थान अलग-अलग हैं। इनका मतलब कोई ऊंचा नीचा नहीं हो सकता। अगर रथ ऊंचा नीचा हो जाए तो आगे जाएंगी ही नहीं। गोल-गोल घूमता रहेगा। बच्चे भी आपसे यही सीखेंगे। जो बच्चे मां का आदर नहीं करते वो क्या सीखेंगे? दुनिया में वो मेरा क्या आदर करेंगे? इसलिए आप सबसे विनती है कि आप घर की नारी का अपमान नहीं करें। उसे किसी तरह से नीचा नहीं दिखाएं। उसकी शक्ति आपके लिए बहुत जरूरी है। उसी तरह स्त्री को भी सहज में उतर कर अपनी शक्ति को सम्हाल लेना चाहिए। और शक्ति में उतर जाना चाहिए।

आप इतने लोग पूजा में आए हैं और सारे भारतवर्ष से लोग आए हैं मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। अब सहज वास्तव में ही समग्र हो रहा है और इतने प्यार से ये सब चीजे हो रही हैं, हर जगह जब भी देखती हूँ लगता है सहज जोरों में फैल रहा है। पर एक ही बात को जान लेना चाहिए कि हम कितने गहरे उतरें। ये जरूरी है। तादाद बहुत हो जाए गिनती बढ़ जाने से कुछ फायदा नहीं होगा। जब तक

आपके अन्दर सहजयोग के मूल्य नहीं उतरेंगे, श्रेष्ठता नहीं आएगी। आप अगर राज राजेश्वरी को मानते हैं तो उसकी शक्ति का प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति आपके अन्दर होनी चाहिए। गहनता के बिना तो ऐसा हुआ जैसे एक चोला बदलकर आपने दूसरा पहन लिया। अन्दर कुछ भी नहीं। ये अन्दरूनी शक्ति हैं, ये शक्ति आपके व्यवहार में, बातचीत में दिखनी चाहिए।

हमारा अनन्त आशीर्वाद

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Divine Cool Breeze

In the South the Raj Rajeshwari aspects of the Devi are worshipped specially. The reason was that there were many Devi devotees born like Adi Shankaracharya, and they established the Shakta Dharma, which means the Dharma of the Shakti. Two types of Dharma started at the same time. Ramanujacharya established the Vaishnava Dharma and as these Dharmas grew, they separated. In reality, in Vaishnava Dharma Mahalaxmi is the one whose work it is. The various aspects of Mahalaxmi are to be awakened within, like to establish Dharma and to be in the central path - neither should one go into the left or the right. To remain in the central path is called Vaishnava. Later this Vaishnava Dharma spread to Gujarat and other parts.

When you go through the Vaishnava path by the grace of the Kundalini then you enter the Sahasrara. In the Sahasrara, Sadashiva resides, i.e. the Brahmaranda following Vaishnava Dharma you eventually arrive at Sadashiva, who is a part of the Shakta Dharma. One should understand that Kundalini is the Shakti and she passes through the central path. So how can you separate both Dharmas. The path of the Shakti is also the central path. Both the Dharmas which are tied together were separated. The reason was that there was no ascent of the Kundalini in those days. In Kolhapur there is the Mahalaxmi temple where she is in the awakened state, people sing 'Rise, rise Amba'. Amba is the Shakti, Kundalini is called Amba. They don't know why they sing this. Vaishnavas make their path, and when their path gets ready then the Kundalini awakens. In Sahaj Yoga we also do this. When you sit towards me with palms outstretched then your seven chakras slowly get alright. It means that you are becoming Vaishnavas. You come from extremes to the central path, and your chakras start working and settling properly. When your chakras get alright then only the Kundalini gets awakened. First you become Vaishnavas and then Shaktas. So both of them are one.

In the South Various aspects of the Goddess were believed and one of them is Rajarajeshwari. Laxmi is on the Vaishnava path and that is why this one aspect of Laxmi was told which is the aspect of the Shakti. Rajarajeshwari means that when the Kundalini comes into the Nabhi where she gets the aspect of Laxmi. There are many types of Laxmi's influence i.e. Gruhlaxmi, Rajlaxmi, etc. This Laxmi gets these various aspects only when the Kundalini Shakti comes into them. It is only by the merging of Kundalini Shakti that these aspects come. Rajarajeshwari is nothing but Kundalini when she takes the aspects of Various Laxmis at the Nabhi. In one can say that the Aspect of Adi Shakti in the Nabhi Chakra is called Rajarajeshwari.

A person in whose Nabhi Chakra Rajarajeshwari is established means that Gruhlaxmi is there in left side, then on right side is Rajarajeshwari. Rajlaxmi state evolves as Rajarajeshwari. How should a Sahaja yogi be in the evolved state of

Rajarajeswari. There is already the blessing of Laxmi, when the Kundalini rises in such a person, the blessing of Laxmi has to come. All Sahaja Yogis are bound to get the blessings of Laxmi and sometimes this Laxmi can grow a lot. The nature of the person becomes like a King. Till your nature doesn't become like that then you must understand that the Kundalini is still moving around the Nabhi. The greatest miracle after coming to Sahaj Yoga is that a person's nature changes. His attitude changes. A person who is filled with Laxmi but in whom Laxmi cannot be seen. For example there are many rich people who are miserly, then you cannot call them Laxmipati. You cannot see any aspect of Laxmi in them. They live like beggars and keep crying about money. They cannot give two pennies to anyone. Such misers have not had the Kundalini awakened in them. They are such misers and are always thinking of money that even their lives may go bad and their face looks like a beggar. Only to attain Laxmi is not the work of the Kundalini. The work of the Kundalini is to bring the aspect of Laxmi in your nature. Rajarajeshwari is the Shakti of the Kundalini and she is the one who brings the aspect of the Laxmipati in you. It doesn't mean that you should have a lot of wealth, but it makes you generous, like a king. You have the temperament of a King. Even kings can be miserly, false and corrupt. But here we are talking of pure Temperament. The one who worships Rajarajeshwari and who has attained Her. Her biggest aspect is generosity. Such a person becomes generous, because he knows that he is filled with the Shakti of Rajarajeshwari. I will never have any need for money or anything so why not enjoy and give gifts to people and keep oneself happy.

In the earlier days when Kings used to be pleased they used to give away their most costly possessions to the people. The one who is not generous is only half a person. First and foremost no King goes and asks for alms. He may become poor but he will not beg. He will die but will not ask for alms. Sahaja Yogis become like a king and they live like kings. Once Akbar asked Birbal who are the most unfortunate people, so Birbal said 'The ones who come to the temple of God and beg from people'. If God is there then why ask for money. Even in Sahaj Yoga there are such people, who think they can make money out of Sahaj Yoga. From such a person you cannot understand the Shakti of Rajarajeshwari. By her Shakti, a person whether he has money or not, you have no fear. There is no feeling of want (Abhav), that I lack this. He feels 'I am sitting in the fullness of the ocean, 'What do I need Why should I be frightened, whenever I am I can achieve everything'. He lives life in a very grand style. His temperament is very large, humble and great. He enjoys only in giving not in taking. Whether rich or poor, he is ready to help a Sahaja Yogi. In Sahaj yoga there are many people who do a lot for others. But if a poor Sahaja Yogi comes they will not even offer a chair to him. So looking at the outside of a person many people give lots of importance to such a person. 'He is very great because he has so many cars' or 'He is a very famous actor, doctor, architect etc.' These are outside manifestations. But if someone thinks that this man has the Shakti in him. There is so much vibrations flowing from him, who is this Aulia? He is the one who has the temperament of a King. There have been many people like this. For example Shivaji.

He was a great man, but his behaviour towards Saints was very beautiful and humble. Once his guru Ramdas came to him, Shivaji wrote a letter and put it in his bag. It was written in that letter 'My Guru, whatever is mine, my wealth, Kingdom, all I have put in your bag'. On reading the letter Guru Ramdas laughed and said 'My child, I am a sanyasi, what will I do with your Kingdom. You are a king and it is your duty. But if you think that you would like to rule this kingdom with Bhakti then make the flag the colour of the robe I wear. By looking at this flag people will know you are ruling the Kingdom like a Sanyasi. You have no attachments towards it, you are a king but you do not know you are a king'. People who think they are very great, and keep boasting. 'I am so and so are not so'. And those who are, will never say so. Once I was travelling in London and next to me a gentleman started talking about India. Then I asked 'Were you in India?' He said, 'Yes I was there many years.' He did not tell us anything else about himself. He got down and left. One day we met suddenly again on the train and he invited us to his house. When we went to his house we found this beautiful palatial house. He was the Viceroy of India, but we never knew that he had been in that position. He gave me such importance. He looked after us so well.

In our country the PA of a minister thinks no end of himself. Once some people went to meet a Minister and they saw one person jumping around and getting angry. He said 'Don't you know I am the P.A.'. Some people just go crazy when they acquire a wee bit. This is not the attitude of Kings. Kings are first and foremost very humble. Arrogance comes when a person thinks he has a lot of wealth or position. If he is educated or in a big job, or the son of a great father then he becomes even more arrogant. You cannot even talk to him. So much so that even ordinary people go crazy. Like in my husband's office even the operator became arrogant. Why do you talk in such a manner? The one who is a complete person is very humble and simple. You must understand that till you are not complete you will have false ego in you. You will have false anger and you get a strange kind of behaviour that people run away. Some are like beggars who as soon as they come you know that they have come to ask. 'This happened to me, that happened to my family'. Another comes and cries for lack of money. You cannot attain the Shakti of Rajarajeshwari without coming in the middle path. It will not move in you. For example what is the use of water to a plastic tree. In the same way there is a false tamasha about these people. I was coming from London and a lady was travelling with us who was loaded with diamonds. She said, 'I believe in simple living and high thinking, we don't wear such colored clothes. Then as India approached she came to me and said, 'I have a problem can you help me?' I have jewellery worth 65 lakhs can you take me out of customs?' I said, 'But you believe in simple living !'".

Greed in a human being is a very horrible thing. There are many people who are always coveting others things. If they go to someone's house and see something they want that. When they get that then they want another and another. There's no end to it and greed gets worse and worse. What is the result of this greed? One gets such a headache acquiring things. For example there is a nice carpet

and I feel greedy about getting this carpet. So I can steal it or then my mind will be busy thinking from where to get this carpet. Then if one did acquire it then one will be worried that it will get spoiled. It is better if I accept the fact that this is not my carpet and so I don't have to worry about thieves. There is no problem, no headaches of insurance etc. Then the madness of greed vanishes. For Sahaja Yogis it is a real nuisance, because they are Sahaja Yogis and they have one foot in the mouth of the crocodile called greed, so how will they come into the boat? If you get greedy about anything then you must think that Rajarajeshwari has turned away.

People who have the Temperament of Rajarajeshwari start enjoying even small things. They do not feel the need of anything. Once we went to Palitana and we climbed up for 2 hours and found a temple at the top of the mountain made of marble. The rest of the people just lay down there. I looked up and saw such beautifully carved elephants and they had each differently carved tails. They all said, 'We are so tired, but from where do you see elephant's tails'. When you learn how to enjoy and to feel the joy of anything. Like Shri Rama became so satisfied after eating the berries Shabari offered him. When you understand this then one can say you are nourished with the Shakti of Rajarajeshwari. If someone gives even a small thing with love, for example even betelnut is given with love, though I don't eat supari, but I will definitely, eat it and one should eat it because by this the other will be pleased. How does he know that I don't eat betelnut. It means that anything in this world is like, when you put mercury on an ordinary piece of glass, then it becomes a mirror in which you can see your face. If you put love in anything that thing becomes beautiful and one's heart feels whom should one give it to? What one should buy for oneself one doesn't think. If you can give up thinking 'What do I want? What do I like?' Otherwise that all pervading power has not come into you. If it will come into you then you will know what is useful to what person. Like you go somewhere and you see a beautiful lamp then you will think. 'I went to that person's house and he did not have this lamp so I will buy for him'. You start understanding everybody's needs when your own needs end. You only remember the problems and pains of others and forget yours. Someone is sick, another needs something. That is why love is called knowledge, knowledge is Pure Love. Because when you love someone with Pure love then you get all the knowledge about him.

Even if she is mahamaya you can know. But love should be Pure. By Pure love you will get all the knowledge and any kind of knowledge. If you see with Pure love anything. For example in Madras, there is lot of poverty, so in the mind the feeling came that little children are standing waiting in the sun for a bus while we are going comfortably in a car. So it started pricking. I thought why not start a private transport when you are awakened then, you come into universal brotherhood.

Rajarajeshwari has a tremendous task that she thinks about everyone. Like the Queen will see to the problems of the subjects. She will try to allay their suffering.

She will not sit around and see how many ornaments she has. In the same way you also become like that. Till you do not rise above your own selves and see into the world, then how can you be a worshipper of Vishwa Nirmal Dharma? Vishwa Nirmal Dharma is not an outside Dharma like we are Hindus, Muslims or Christians. It is the light from within and in this light a person emerges as a great light. He doesn't think that what am I getting? What have I got? He thinks that what can I do for others? I am nothing. Till now I have given realisation to only 100 people and I have not done enough then one can say that the Rajarajeshwari Shakti is moving up in him. She is urging him to distribute the tremendous Shakti he has in him. You cannot count it with money. Rajarajeshwari Shakti is the one which looks after everyone everywhere. She gives benevolence, peace and joy to everyone. That same Shakti is there within you too. You can take it to the greatest heights. What work can be done with even one paisa cannot be done with thousands of rupees. The powers of giving should be great. Shri Krishna went to Vidura's house and ate Spinach (saag) but did not eat Duryodhana's rich sweets. This points to the fact that anything cooked with love cannot be weighed. So first all Sahaja Yogis must tell themselves that they have no needs if they want to clean their chakras. I have come to Sahaj Yoga for the sake of other people's needs.

Yesterday many people came after the programme but my right heart got caught up very badly. I could not understand why the right heart catches here so much. It has never happened before. It is the same shakti that pointed it out to me. So I asked how are Gruh Laxmis here? How do the people in Hyderabad treat their Gruhlaxmis. Then I found out that they treat them very badly. They do not respect their wives and they are all the time getting angry with them. They will respect their mothers but not their wives. They told me that this is the Muslim influence. The Muslims don't know that the Quran has said so much about respecting their wives. The ones who don't are foolish. Quran has so much respect for women which you will find nowhere. Then I understood that 'where wives are worshipped, there reside the Gods'. Where the wife is not respected the Gods will not reside. Of course if you have respected your wife then the children will respect you and respect each other. But if the woman herself is not worthy of worship and does unworthy things then you should put her right. But if she is a good woman and she looks after the children and looks after the house with love, then such a woman should be respected not only at home but also in the society. Yesterday I suffered for over half an hour because of right heart catch. The same torture came within me with which you torture your wives. May be it can be that a wife may not understand Sahaj Yoga so much with her intellect but she may understand it from her heart. A woman normally understands things through her heart, while a man understands through his brains. To understand from the heart is a very great thing. The woman has always been thought of as embodiment of Shakti. In a house where there is no respect for women there nothing gets done properly, reason is that woman is the Shakti. For Example if this mike has no electricity then what can I say. If you suppress your house wife and do not respect her then the Shakti will not move in you. If Indians have any fault it is this that they do not respect the power of the wife. It is the greatest faults of Indians. They

worship the Devi in the form of a virgin, all forms they worship them in, but will not worship the Devi in the form of the Gruh Laxmi. That is why I have to tell you that if you are Sahaja Yogis then be respectful towards your wives. I have heard that you get angry with them openly. Then you will also be shouted at openly. Man has no right that he should insult his wife for any reason. If I can put this one thing right with my attention then the Shakti of Rajrajeshwari will definitely start moving within you. You must understand that husband and wives are the two wheels of a Chariot, one on the left and one on the right. Left cannot come to the right and right cannot go to the left. Both are necessary. Both are alike but only their place is different. This means that no place is higher or lower than the Chariot cannot move forward. Children also learn the same from you. The children who will also not respect their mothers cannot do anything in the world.

What respect will they have for Me?. That is why from today I pray to all that do not insult the wife of your home. Do not pull her down in anyway. You need her Shakti which is very important for you.

In the same way women in Sahaj yoga should also look after their Shaktis, and should settle down in the Shakti.

Everywhere I see I find that Sahaj yoga is spreading with great speed but you must know one thing that how deep have we grown. This is important. By increasing the quantity it is not going to help, till you do not have the value and quality of Sahaj Yoga. If you believe in Rajrajeshwari then you should have the manifestation of the Shakti in you. If not, then outwardly you changed your clothes but within you are empty. It is an inner Shakti and this Shakti should show in your behaviour and speech.

May God Bless You.